Vol. 12, No.1 (January 2023) pp. 132-136 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & indexed in EBSCO International Database of Journals

संगीत में रोज़गार की नई संभावनाएं: एक अध्ययन

डॉ॰ रितु सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (सितार)
कमला आर्य कन्या पी. जी. कालेज, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश
Email ID: ritujeets@gmail.com

सारांश

ललित कलाओं के अंतर्गत संगीत को सर्वोच्च स्थान दिया गया है. संगीत में निहित लालित्य का अर्थ एवं उद्देश्य है- मानव के मन मस्तिष्क को आकृष्ट करना तथा उसी आकर्षण में तल्लीन होकर रसानुभूति की चरमोत्कर्ष अवस्था में उसका नैतिक उत्थान करना है. सांस्कृतिक विकासक्रम में अन्याय कलाओं के समान ही संगीत कला भी श्रेष्ठता के शिखरों को लांघती हुई आज के वैज्ञानिक युग तक पहुंची है. संगीत शिक्षा का कार्य केवल विषय का ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं अपितु विद्यार्थी को इस योग्य भी बनाना है कि वह अपने जीवन के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की पूर्ति कर सके तथा जीवनयापन हेतु रोजगार के विभिन्न सुनहरे अवसरों को प्राप्त कर सके. संगीत की अपरिमित प्रयोगात्मक शक्ति, उसकी व्यापकता एवं प्रभावोत्पादकता की नींव जितनी सुदृढ़ है उतनी ही व्यवसाय की सम्भावनाओं से परिपुरित भी है. प्रस्तुत लेख में संगीत में व्यवसाय की नई संभावनाओं को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है.

मुख्य बिन्दु: *संगीत* शिक्षा, रोज़गार, जीवीकोपार्जन, व्यवसायपरक सम्भावनाएँ.

संगीत के माध्यम से मूल्य शिक्षा का क्षेत्र व्यापक हो रहा है. आज के भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा को मुख्य रूप से व्यवसाय केन्द्रित माना जाने लगा है. इसी कड़ी में संगीत शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है. संगीत भारत की संस्कृति और सभ्यता में रचा बसा है. यहां संगीत को देव विद्या के रूप में अंगीकार किया गया है. यह विषय संस्कृति और समाज का अभिन्न अंग होते हुए भी जीवीकोपार्जन के लिए महत्वपूर्ण है. भारतीय संगीत की धरोहर गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत अनेक विषम राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों में भी सुरक्षित रही है और वर्तमान में हमारे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोक संगीत और फिल्म संगीत आदि की बुनियादी शिक्षा आदि देते हुए आगे बढ़ रही है साथ ही छात्र-छात्राओं को विभिन्न प्रकार के प्रयोग करने के लिए नयी सृजनात्मक क्षमता भी प्रदान कर रही है.

संगीत की निरंतर विकास यात्रा के फलस्वरुप संगीत शिक्षा के क्षेत्र में व्यवसायिकता के नये दृष्टिकोण व आयामों का विकास हुआ है. वर्तमान में संगीत शिक्षण व्यवसायिक दृष्टिकोण से महती संतोषजनक है. (छापेकर, 2005). संगीत

शिक्षण में एक ओर जहां विद्यार्थियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आदान-प्रदान होता है, वहीं संस्थानों में नियुक्त योग्य शिक्षकों से संगीत के विभिन्न अंगों की व्यापक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी होता है. इस विषय में वर्तमान समय में रोजगार के अवसर में भी भरपूर सम्भावनाएं नजर आती है, जैसे- संस्थाओं में शिक्षक के रूप में, मंचीय कलाकार के रूप में, वाद्य वृंद-वादक, गीत लेखक, विचारक, प्रकाशक, वाद्य निर्माता, वितरक, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के कलाकार, संगीत चिकित्सक इत्यादि के क्षेत्र में. इनके अतिरिक्त संगीत निर्देशक, संगीत सभा के आयोजक, संगीत विचारक एवं समालोचक के रूप में, विज्ञापन के क्षेत्र में, स्वतंत्र गायकी के क्षेत्र में, ध्वनि मुद्रण के क्षेत्र में तथा वाद्य यंत्रों के क्रय-विक्रय के क्षेत्र इत्यादि में रोजगार के विभिन्न अवसर प्राप्त कर सकते हैं. वर्तमान समय के विज्ञान व तकनीकी के युग में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का संगीत के साथ समायोजन हो जाने से इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों की सुविधा तथा इंटरनेट की उपलब्धता के साथ सी डी और एल्बम के द्वारा संगीत के संरक्षण और प्रचार-प्रसार तथा वितरण से हमें संगीत शिक्षा द्वारा व्यवसायिक लक्ष्यों की अपरिमित दिशायें खुली हुई दृष्टिगोचर होने लगी है.

जिस प्रकार विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शिक्षण संस्थाओं में संगीत को एक प्रतिष्ठित विषय के रूप में मान्यता प्रदान कर इस क्षेत्र से सम्बन्धित शिक्षक गणों तथा कलाकारों को पदक, सम्मान, छात्रवृत्ति तथा अनेक प्रकार से संवर्धन प्रदान कर इस विषय को नैतिक व्यवसायी बनाया गया है, वह इस क्षेत्र की नित्य प्रति प्रगति का सूचक है. संगीत की दुनिया में विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार जीविकोपार्जन ढूंढ सकते हैं. जो क्षेत्र संगीत से सम्बन्धित व्यवसायिकता के नए आयाम का निर्धारण कर रहे हैं उनमें से कुछ क्षेत्र बिन्दु इस प्रकार हैं:-

संगीत शिक्षक: संगीत के क्षेत्र में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है. संगीत में विद्यार्थियों के समक्ष रोजगार की दृष्टि से संगीत शिक्षक का विकल्प सदैव से प्राथमिक स्तर पर रहा है. संगीत का विद्यार्थी संगीत की शिक्षा प्राप्त कर हमेशा से ही संगीत शिक्षक के रूप में व्यवसाय को महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक स्तर पर रखते हैं. वर्तमान समय में शिक्षण संस्थाओं में जीविकोपार्जन के विभिन्न संसाधन परिपोषित हो रहे हैं. प्रारंभिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक संगीत शिक्षकों के विभिन्न पद शिक्षण संस्थाओं में दृष्टिगत होते हैं. इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत शिक्षण अर्थात् प्राइवेट ट्यूशन के द्वारा भी संगीत विषय में व्यवसाय किया जा सकता है. इस प्रकार संगीत विषय में शिक्षण कार्य के माध्यम से जीविकोपार्जन के असीमित संभावनाएं हैं.

मंच प्रदर्शक: यदि संगीत के प्रायोगिक पक्ष का ज्ञान विद्यार्थियों को गूढ़ रूप से है और वह उसकी बारीकियों को अच्छी तरह से पहचानता है तो वह एक मंचीय कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित होकर अपना जीवन यापन करने में सक्षम हो सकता है. मंच प्रर्दशन से जहाँ एक ओर कलाकार अपनी कला के माध्यम से श्रोताओं को आनन्दित करता है वहीं दूसरी ओर कला के माध्यम से जीवीकोपार्जन भी करता है. इसके अंतर्गत शिक्षण ध्वन्यांकन, कंसर्ट, लाइव शो, मंच प्रदर्शन, विडियो जॉकी और रेडियो जॉकी के रूप में भी अवसर ढूंढ सकते हैं. शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोकसंगीत, गजल फ्युजन आदि के क्षेत्र में भी भरपूर अवसर उपलब्ध है.

संगीत मार्केटिंग: संगीत मार्केटिंग को भी संगीत के व्यवसाय से संबंधित कार्य क्षेत्र माना जा सकता है. संगीत विपणन पक्ष आज के दौर में सबसे आवश्यक है क्योंकि किसी भी क्षेत्र की लोकप्रियता उसके मार्केटिंग पर ही आधारित होती है. आज के संदर्भ में संगीत के क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत, सूफी संगीत, फिल्म संगीत या सुगम संगीत सभी प्रकार के संगीत का प्रचार प्रसार हो रहा है. संगीत के कुशल विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठाकर लोकप्रिय संगीत को न केवल बाजार में ला सकते हैं बल्कि इस क्षेत्र की संभावनाओं को समझ कर अपने संगीत कौशल का प्रयोग कर सकते हैं और इस क्षेत्र में जीविकोपार्जन का एक नवीन मार्ग बना सकते हैं.

संगीत निर्देशन एवं गीत लेखन: संगीत निर्देशन एवं गीत लेखन का कार्यक्षेत्र अत्यन्त व्यापक है. जिन विद्यार्थियों में गीत लिखने का हुनर और म्यूजिक कम्पोजिंग की बारीक समझ है, उनके लिए इस क्षेत्र में असीमित संभावनाएं हैं. संगीत निर्देशक विभिन्न अवसरों के अनुरूप गीत लिखकर विभिन्न समारोहों के संगीत कार्यक्रमों को सार्थकता प्रदान करते हैं. वर्तमान समय में गीतकार फिल्मों, दूरदर्शन, धारावाहिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक समारोहों व व्यक्तिगत रूप से अनेक विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु गीतों की रचना द्वारा धनोपार्जन कर सकते हैं (शर्मा, 2013). इसी प्रकार संगीत निर्देशक भी गीतो हेतु व वाद्य वादन हेतु स्थिति के अनुरूप धुनें बनाकर अपनी कला का परिचय भी दे सकते हैं व जीविकोपार्जन भी प्राप्त कर सकते हैं.

वाद्य निर्माता: वाद्यों के बिना सांगीतिक कार्यक्रमों की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. एक बड़ी संख्या में वाद्य निर्माता सांगीतिक वाद्यों के निर्माण द्वारा अपना जीविकोपार्जन करते हैं. वर्तमान समय में वाद्य यंत्रों का निर्माण और मरम्मत के व्यवसाय की बहुत मांग है तथा आवश्यकता भी है. भारतीय संगीत में अनेक प्रकार के वाद्य यंत्र प्रचार-प्रसार में हैं. कुछ वाद्य अधिक प्रचलित हैं तो वहीं कुछ कम प्रचार में हैं. इन वाद्य यन्त्रों को बनाने वाले अच्छे कारीगरों की संख्या आज भी गिने-चुने ही हैं. जबकि भारतीय वाद्यो की मांग देश-विदेश में लगातार बढ़ रही है. अतः विद्यार्थी वाद्य निर्माण की सही तालीम लेकर वाद्य यंत्र निर्माता बन सकते हैं. इसके अतिरिक्त वाद्यों के मरम्मत के काम के लिए भी इसकी समुचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है. इस क्षेत्र में उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यवसाय का एक सुदृढ़ साधन बनाया जा सकता है.

संगीत पत्रकारिता: संगीत पत्रकारिता के अंतर्गत संगीत सम्बन्धी संपादन, लेखन, समीक्षा आदि कार्य आते हैं. इस क्षेत्र के अंतर्गत दो आयाम देखे जा सकते हैं-(1) प्रिंट मीडिया (2)इलेक्ट्रॉनिक मीडिया. यदि विद्यार्थी को पत्रकारिता एवं संप्रेषण का ज्ञान एवं रुचि है तो वह इसके माध्यम से संगीत को आम जनता के बीच बेहतर स्वरूप दे सकता है. विभिन्न स्थानों पर हो रहे सांगीतिक कार्यक्रमों का अवलोकन करके उनकी आलोचनात्मक व्याख्या विभिन्न समाचार पत्रों, साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में करके एक पत्रकार के रूप में जीवीकोपार्जन किया जा सकता है (अग्रवाल, 2016). समीक्षा किसी रचना की व्याख्या भर नही है. श्रेष्ठ समीक्षा के माध्यम से रचना का पुनर्जन्म होता है. किसी उभरते हुए कलाकार की प्रस्तुति की संतुलित और परिपक्व समीक्षा उसके लिए नवीन संभावनाओं के द्वार खोल सकने में सक्षम होती है, जबकि अतार्किक, बिना सही समझ के की गई व्याख्या उसके श्रोताओं

में गलत सन्देश भी प्रेषित कर देती है. इस प्रकार एक समझदार समीक्षक कलाकार और उसके श्रोताओं के मध्य एक विवेकसेतु का भी कार्य करता है (वर्मा, 2019). अतः संगीत सम्मेलन, संगीत गोष्ठियाँ, विभिन्न संस्थाओं द्वारा आयोजित संगीत कार्यक्रमों के आयोजनों में संगीत समीक्षक आदि के क्षेत्र में अर्थोपार्जन कर सकते हैं. इस प्रकार संगीत समीक्षक, अलोचक, सम्पादक, लेखक एवं एक पत्रकार के रूप में इस क्षेत्र में अपरिमित सम्भावनाएं हैं.

संगीत चिकित्सा: चिकित्सा एवं संगीत दोनो ज्ञान प्रणालियों को समन्वित कर व्यवसाय करने की अनेक सम्भावनाएं परिलक्षित होती हैं. संगीत जहाँ मनुष्य को मानसिक शांति प्रदान करता है, उसे तनाव मुक्त कर उसके अनेक रोगों को दूर करता है वहीं उसे व्यवसाय की नई राहें भी दिखाता है. संगीत की आरोग्य दायिनी शक्ति के बारे में आज प्रायः सभी परिचित है. संगीत चिकित्सा का प्रावधान प्राचीन काल से प्रचार में है. आधुनिक काल में भी अनेक संगीतकारों, वैज्ञानिकों आदि ने अपनी शोध एवं प्रयोगों के द्वारा संगीत चिकित्सा की उपयोगिता को सुदृढ़ किया है. संगीत में रोगी के संवेगात्मक एवं बौद्धिक पहलुओं को जागृत करने की अद्भुत शक्ति होती है. वर्तमान समय की जीवन शैली ने एक नए प्रकार के तनाव और मानसिक जड़ता को जन्म दिया है. आज की भागदौड़ भरी जीवन पद्धति विभिन्न रोगों को आमंत्रित करती है. संगीत एक ऐसी औषधि है जो बिना किसी दुष्प्रभाव के मानव में आनंद, स्फूर्ति, चेतन एवं एकाग्रता प्रदान करती है. संगीत चिकित्सा पद्धति से अनेक रोगों का उपचार सम्भव है, जैसे- डायबिटिज, ब्लड-प्रेशर, हायपरटेंशन, अनिद्रा, हृदय रोग नियन्त्रण, मद्यपान और नशीले पदार्थों की आदत से मुक्ति, मनोरोग तथा व्यक्ति में एकाग्रता, मानसिक संतुलन, कार्यकुशलता, एवं अन्य दिमागी शक्तियों को बढ़ाने के लिए भी संगीत चिकित्सा के प्रयोग कारगर सिद्ध हुए हैं (टाक, 2009).

इस दिशा में व्यवसाय की अनेक राहें विकसित हो रही हैं. संगीत के द्वारा चिकित्सा पद्धति के प्रचार प्रसार में अनेक संस्थाएं प्रयासरत है साथ ही संगीत विद्यार्थियों के लिए रोजगार की अपार संभावनाएं प्रदान कर रही हैं.

उपसंहार: उपर्युक्त कार्य क्षेत्रों के अतिरिक्त संगीत के क्षेत्र में और भी अन्य रोजगारपरक संभावनाएं हो सकती हैं, जैसे- संगीत नाटिका, ध्वन्यांकन प्राविधिक अभियांत्रिक, तकनीक, कंप्यूटर, उच्चानुशीलन, उद्घोषक, संगीत के द्वारा श्रमिकों की कार्य क्षमता उत्पादन में वृद्धि आदि के रूप में संगीत की नवीन व्यवसायिक संभावनाएं सामने आ रही हैं. संगीत सुनने, सीखने, सुरक्षित रखने की तकनीक में बड़ा सुधार हुआ है एवं इस क्षेत्र में भी व्यवसाय की अपार संभावनाओं का लोकार्पण हो रहा है. इस प्रकार वर्तमान परिदृश्य में भारतीय संगीत मात्र मनोरंजन का साधन न रहकर वह विभिन्न नवीन व्यवसायिक सम्भावनाओं से समृद्ध एवं सुदृढ़ हो चुका है.

सन्दर्भ:

- अग्रवाल, पल्लवी. *पत्र-पत्रकारिता दशा एवं दिशा,* वन्दना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016
  Agrwal, Pallavi. *Patra – Patrikarita Dasha evam Disha*, Vandna Publication, New Delhi, 2016
- छापेकर, मिलिया. 'व्यवसाय के रूप में समाज', *संगीत कला विहार*, 2005
  Chapekar, Miliya. "Vyavsay ke Roop me Samaj". *Sangeet Kala Vihar,* 2005.

- टाक, माया. "कितना सक्षम है संगीत रोगों के उपचार में", *संगीत संकल्प*, (जयपुर शाखा), 2009

  Tal, Maya. 'Kitana Saksham hai Sangeet Rogo ke Upchar me". Sangeet Sankalp, (Jaipur Shakha), 2009.

- शर्मा, कविता. *संगीत के क्षेत्र में व्यवसायिक सम्भावनाएँ*, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013.

  Sharma, Kavita. *Sangeet ke Kshetra me Vyavsayik Sambhavnaie*. Sanjay Prakashan, New Delhi, 2013

- वर्मा, अमित कुमार. "संगीत समीक्षा और समीक्षक". *आजकल,* सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली. (जनवरी 2019): 18.

  Verma, Amit Kumar. "Sangeet: Sameeksha Aur Sameekshak" *Aajkal*, Publication Division, Ministry of Information & Broadcast, New Delhi. (January 2019): 2018.